मुख्य बिंदु

झुकने का अपना अर्थ है, आनंद है

एक मित्र ने पूछा है कि आप उठते हैं—कोई हाथ जोड़ता है आपको, कोई आपके पैर छूता है, तो मुझे बहुत हैरानी होती है। उन्होंने लिखा है कि उन्हें बहुत हैरानी होती है। क्यों कोई पैर छुए किसी के? क्यों कोई किसी को हाथ जोड़े?

बहुत हैरानी की बात तो है, कोई क्यों किसी के पैर छुए! कोई क्यों किसी के हाथ जोड़े! लेकिन उन मित्र ने शायद कभी नहीं सोचा होगा, मैं भी पक्ष में नहीं हूं कि कोई किसी के पैर छुए और कोई किसी के हाथ जोड़े। लेकिन एक शर्त बता देनी जरूरी है : अगर वह सोचता हो कि पैर छूने से कुछ हो जाएगा तो गलती में है। अगर वह सोचता हो कि हाथ जोड़ने से कोई प्रसाद मिलेगा, कोई आशीर्वाद मिलेगा, तो वह भूल में है। वह बहुत सस्ते सौदे करने की कोशिश में लगा हुआ है। वह मूढ़ है, अगर वह सोचता है कि किसी के पैर छूने से कुछ हो जाने वाला है। अगर इस कारण कोई किसी के पैर छू रहा है तो गलती कर रहा है। वह वही पूजा वाली बात शुरू हो गई, वह भूल कर रहा है। और भूल कर ऐसी भूल नहीं करनी चाहिए। कम से कम मेरे साथ तो नहीं करनी चाहिए।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं यह कह रहा हूं कि पैर छू लेना पाप है किसी का। यह मैं नहीं कह रहा हूं। मैं यह कह रहा हूं कि पैर अगर इस कंडीशन के साथ, इस शर्त के साथ छुए जा रहे हैं कि पैर छूने से कुछ मिलेगा, तो गलत है बात, कुछ नहीं मिलने वाला है। लेकिन अगर कुछ मिल गया है और सिर्फ अनुग्रह में पैर छुए जा रहे हैं, तो दुनिया में पैर छूना कभी नहीं रोका जा सकता। अगर पैर छूना सिर्फ एक धन्यवाद है!

और आप कहेंगे कि धन्यवाद तो हाथ जोड़ कर भी दिया जा सकता है, पैर छूने की क्या जरूरत है?

लेकिन शायद आपको पता नहीं है, जब आपको क्रोध आता है किसी आदमी पर तो आप जूता निकाल कर उसके सिर पर क्यों मार देना चाहते हैं? कभी सोचा है? सारी दुनिया में, यह कोई भारत और चीन और किसी एक देश की बात नहीं है, सारी दुनिया में, आदमी क्रोध से भर जाए तो जूता निकाल कर किसी के सिर पर क्यों मार देना चाहता है? सिर पर जूता मारने से क्या हो जाएगा? पागलपन है न! जूते को सिर में लगाने से क्या हो सकता है?

जब कोई आदमी प्रेम से भर जाता है पृथ्वी पर कहीं भी, तो किसी को अपने हृदय से क्यों लगा लेना चाहता हे? हृदय से लगाने से प्रेम का क्या संबंध है? हड्डियां हड्डियों से मिल

जाएंगी, इससे क्या प्रेम हो जाएगा? लेकिन शायद ही आपने कभी पूछा होगा कि दो प्रेमी एक-दूसरे को हृदय से क्यों लगाते हैं? और दो क्रोध से उन्मत्त व्यक्ति अपने पैर को दूसरे के सिर से क्यों लगाना चाहते हैं? अब इतनी छलांग लगानी मुश्किल है कि किसी के सिर पर खड़े हो जाओ, इसलिए जूता प्रतीकात्मक रूप से उसके सिर पर लगाते हैं। लगाना पैर चाहते हैं उसके सिर पर, लेकिन पैर लगाना जरा मुश्किल बात है। उतना हाई जंप कठिन पड़ेगा। तो उसके लिए जूता निकाल कर, सिंबालिक, कि लगा दिया पैर तुम्हारे सिर से।

क्रोध में आदमी अपने पैर को किसी के सिर से लगाना चाहता है। और रेवरेंस में, श्रद्धा में, आदर में क्या करे? ठीक क्रोध से उलटी अवस्था है वह। वह किसी के पैर से अपने सिर को लगा देना चाहता है। यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, इनका इससे ज्यादा अर्थ नहीं है। इनसे कुछ मिलने वाला नहीं है। कुछ भीतर घटना घटी है, उसे अभिव्यक्त करने के माध्यम हैं ये।

हम किसी आदमी को प्रेम करते हैं, उसका हाथ हाथ में ले लेते हैं। हाथ में हाथ लेने से क्या होने वाला है? लेकिन नहीं, कहीं प्रेम घटित हुआ है और आदमी असमर्थ है, कैसे उसे प्रकट करे? कहीं उसे लगा है कि भीतर मैं जुड़ गया हूं, उस जोड़ को कैसे जाहिर करे? वह हाथ को हाथ में लेकर जोड़ जाहिर करता है। और भी भीतर गहरा मालूम पड़ता है कि मैं जुड़ गया हूं, तो वह किसी को हृदय से हृदय लगा लेता है, वह आलिंगन कर लेता है। वह यह जाहिर करता है कि भीतर मैं इतना मिल गया हूं कि तुम्हें कहना चाहता हूं शरीर के प्रतीकों से कि मिलन हो गया है।

मैं नहीं चाहता कि कोई किसी के पैर छुए। लेकिन कोई घड़ी ऐसी हो सकती है कि पता ही न चले कि हमने किसी के पैर छू लिए हैं, तब बात दूसरी है। अगर सोच कर, विचार कर और हिसाब लगा कर पैर छूते हों, तो बिलकुल फिजूल मेहनत कर रहे हैं, कवायद कर रहे हैं, इससे कोई फायदा नहीं है। तो कभी भूल कर किसी का सोच कर पैर मत छूना कि यह आदमी, दूसरे लोग इसके पैर छूते हैं, इसलिए मैं छू लूं। बेकार मेहनत है। इसके पैर छूने से कोई स्वर्ग ओर वैतरणी पार हो जाएंगे। गलती में हैं, धोखे में हैं। इसके पैर छूने से ज्ञान मिल जाएगा। फिजूल की आकांक्षा कर रहे हैं, व्यर्थ की आकांक्षा कर रहे हैं। लेकिन किसी क्षण में ज्ञात भी नहीं होता कि हम कहीं झुक गए हैं। उस झुक जाने का एक आध्यात्मिक अर्थ है, एक मूल्य है।

और फिर पूछने जैसा है, विचारने जैसा है कि कोई दूसरा आदमी झुक रहा है और किसी दूसरे आदमी को परेशानी हो रही है! अगर वे खुद झुक रहे होते और उन्हें परेशानी होती तो समझने की बात थी। एक दूसरा आदमी किसी के पैर में झुक रहा है और वे परेशान हो रहे हैं। अजीब परेशानी है! आप क्यों परेशान हो रहे हैं? मैं क्यों परेशान हो रहा हूं? दो आदमी प्रेम कर रहे हैं। मैं परेशान हो रहा हूं! मैं बेचैन हुआ जा रहा हूं कि दो आदमी प्रेम क्यों कर रहे हैं! यह मेरी बेचैनी क्या बताती है? एक आदमी किसी को आदर और श्रद्धा दे रहा है, धन्यवाद दे रहा है। मैं परेशान हुआ जा रहा हूं। क्यों मैं परेशान हो रहा हूं?

परेशानी के दो-तीन कारण हो सकते हैं। एक, परेशानी का कारण एक तो यह कि दूसरों को झुकते देख कर, मेरा जो भीतर अहंकार है,

क्रोध में आदमी अपने पैर को किसी के सिर से लगाना चाहता है। और रेवरेंस में, श्रद्धा में, आदर में क्या करे? ठीक क्रोध से उलटी अवस्था है वह। वह किसी के पैर से अपने सिर को लगा देना चाहता है। यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, इनका इससे ज्यादा अर्थ नहीं है

जो झुकना नहीं जानता—मेरा जो अहंकार है, जो झुकना नहीं जानता—उसे बड़ी चोट लगती है। अगर कोई भी न झुके तो वह निश्चिंत हो जाता है। अगर कोई झुके तो उसे चोट लगती है।

जैसे तीन आदमी जा रहे हैं और एक भीख मांगने वाला सामने खड़ा हो जाए और उन तीन में से एक आदमी पैसे निकाल कर भिखमंगे को दे दे और बाकी दो न देना चाहते हों पैसे, तो उसके देने से चोट लगती है, क्योंकि अब न देना एक भिखमंगे के सामने अपमानित होना है। अगर इस मित्र ने भी न दिया होता पैसा, तो वे तीनों अपनी अकड़ से जा सकते थे; क्योंकि तीनों ने नहीं दिया था, तीनों बराबर थे।

एक आदमी चोरी करता है और अगर उसे पता चल जाए कि यहां जितने लोग बैठे हैं सब चोर हैं, उसके अपराध का भाव विलीन हो जाता है। क्योंकि कोई डर की बात नहीं, सभी चोरी कर रहे हैं। चोरी आम है। इसीलिए तो आप अखबार उठा कर सबसे पहले देखते हैं कि कहां चोरी हुई, कहां हत्या हुई, कहां क्या हुआ। अपने को विश्वास दिलाने के लिए कि कोई फिक्र नहीं, सब जगह यही हो रहा है। कोई हम ही कर रहे हैं, ऐसा नहीं है, हर आदमी यही कर रहा है। यह तो यूनिवर्सल फिनामिना है। यह तो हर आदमी कर रहा है। इसमें कोई घबड़ाहट की बात नहीं है। एट ईज़, आदमी को भीतर एक विश्राम मालूम पड़ता है कि सब ठीक है। हम सामान्य आदमी हैं, जैसे सब लोग हैं।

लेकिन अगर एक आदमी के बाबत पता चलता है कि वह ईमानदार है, सच्चा है, तो आप एकदम से विश्वास नहीं करते। आप हजार चेष्टा करते हैं खोजने की कि वह सच्चा सच में है? ईमानदार सच में है? आप सब उपाय करते हैं पता लगाने का कि वह है भी ईमानदार? और जब तक आप पता नहीं लगा लेते कि अरे सब बेईमानी है वहां भी, सब ऊपर का धोखा था, तब तक एक बेचैनी अनुभव होती है मन में कि यह कैसे हो सकता है कि एक आदमी ईमानदार है और मैं बेईमान हूं! उसकी ईमानदारी मेरी बेईमानी की तुलना में ऊंची मालूम होने लगती है, मैं नीचा मालूम होने लगता हूं। एक इनफीरिआरिटी, एक हीनता पकड़ लेती है। तो चेष्टा चलती है... हम किसी अच्छे आदमी की अच्छाई को एकदम से मानने को राजी नहीं होते। मजबूरी में राजी होते हैं, जब कोई उपाय ही न रहे तब हम मानने को राजी होते हैं।

लेकिन एक आदमी के बाबत हमें कोई कहे कि वह बेईमान है, चोर है। हम एकदम मान लेते हैं, हम बिलकुल खोजबीन नहीं करते। हम बिलकुल खोजबीन नहीं करते कि हम... एक आदमी ने हमें कहा कि वह चोर है, बेईमान है... हम खोजबीन करें, फिर मानें। नहीं, कोई खोजबीन नहीं करता। बल्कि अगर उसने कहा था कि वह पचास परसेंट चोर है, तो जब हम दूसरे को खबर देते हैं तो वह खबर सौ परसेंट हो जाती है। हमारे दिल को राहत मिलती है इस बात से कि वह आदमी भी बेईमान है। वह जो हमारे भीतर हीनता का भाव था, वह मिट जाता है। और हम उस आदमी की पचास परसेंट चोरी को सौ परसेंट क्यों बताने लगते हैं? क्योंकि हम जितना बड़ा पापी अपने आस-पास के लोगों को बता सकें, उतना ही हमारा पाप कम और हम ऊपर उठते जाते हैं।

> मैं नहीं चाहता कि कोई किसी के पैर छुए। लेकिन कोई घड़ी ऐसी हो सकती है कि पता ही न चले कि हमने किसी के पैर छू लिए हैं, तब बात दूसरी है। अगर सोच कर, विचार कर और हिसाब लगा कर पैर छूते हों, तो बिलकुल फिजूल मेहनत कर रहे हैं, कवायद कर रहे हैं, इससे कोई फायदा नहीं है

सुना होगा आपने, बहुत पुरानी कहानी है, कि एक सम्राट ने एक लकीर खींच दी और अपने दरबारियों से कहा कि इसे बिना छुए हुए छोटा कर दो। वे मुश्किल में पड़ गए। लेकिन जो दरबार का कवि था हंसी-मजाक करने वाला, जो दरबार का जोकर था, उसने एक बड़ी लकीर उसके नीचे खींच दी। उसने उस लकीर को छुआ भी नहीं और वह छोटी हो गई, क्योंकि बड़ी लकीर नीचे खींच दी गई।

जब हम आस-पास के पाप की खबर सुनते हैं, तो हम उस पाप को बड़ा कर देते हैं एकदम। वह हमारे पाप की लकीर को तो छोटा करना मुश्किल है, लेकिन दूसरे की पाप की लकीरों को बड़ा किया जा सकता है। और तत्काल हमारी लकीर छोटी हो जाती है।

इसीलिए निंदा में इतना रस है। न संगीत में इतना रस है, न अध्यात्म में इतना रस है; निंदा में जो रस है वह अदभुत है। वह रस ही अदभुत है। न वीणा इतना संगीत पैदा कर सकती है, न संत ऐसी वाणी दे सकते हैं, जैसा निंदा में आनंद उपलब्ध होता है। वह क्यों होता है?

तो एक तो कारण यह है कि अगर कोई भी न झुके, तो वह हमारा जो नहीं झुकने का आदी अहंकार है वह निश्चिंत रहता है। लेकिन आस-पास अगर लोग कभी झुकने लगें, तो हमारी अकड़ को कठिनाई मालूम होने लगती है। तो हम किसी भांति यह ठहराना चाहते हैं कि झुकने वाले गलत हैं, ताकि यह सिद्ध हो जाए कि न झुकने वाला सही है।

लेकिन मैं आपसे कहता हूं, झुकने वाले गलत हैं अगर वे किसी इच्छा से झुकते हों, लेकिन न झुकने वाला हर हालत में गलत है। झुकने वाले सिर्फ एक हालत में गलत हैं, अगर वे किसी इच्छा

से झुकते हों। कुछ चाहने के लिए, कुछ पाने के लिए झुकते हों, तो बिलकुल गलत हैं। लेकिन न झुकने वाला हर हालत में गलत है। क्योंकि न झुकने की जो प्रवृत्ति है, अगर हम गौर से देखें, तो न झुकने की प्रवृत्ति = न सीखने की प्रवृत्ति, दोनों बराबर हैं। एटिट्यूड ऑफ लर्निंग, सीखने की प्रवृत्ति, झुकने की प्रवृत्ति है। जो जितना झुक जाता है, उतना सीखता है। उतना, उतना विनम्र।

एक नदी के घाट पर एक औरत खड़ी थी। वह अपने सिर पर मटकी लिए हुए है और घंटों से खड़ी है। फिर एक दूसरी औरत आई, वह भी मटकी लिए हुए है। वह झुकी, उसने अपनी मटकी में पानी भर लिया और जाने लगी। वह खड़ी औरत बोली, बड़े आश्चर्य की बात है, मैं एक घंटे से खड़ी हूं और मेरी मटकी अभी तक नहीं भरी!

उस दूसरी औरत ने कहा कि मटकी तो भर जाती, नदी तो भरने को हमेशा तत्पर थी, लेकिन झुकना तो पड़ेगा, मटकी झुकानी तो पड़ेगी। नदी तो बही चली जाती है। नदी तो कहती नहीं कि मत भरो। नदी तो किसी की भी मटकी में जाने को सदा तत्पर है। लेकिन उनकी ही मटकियों में जा पाती है जो झुकते हैं और नदी के तल तक मटकी को ले आते हैं। तुम अकड़ कर खड़ी हो। तो तुम खड़ी रहो जन्मों-जन्मों तक। यह मटकी नहीं भर सकेगी।

अहंकार कभी भी कुछ नहीं सीख पाता है। विनम्रता सीखती है, ह्युमिलिटी सीखती है। ह्युमिलिटी का मतलब क्या है? विनम्रता का मतलब क्या है? विनम्रता का मतलब है : झुकने की पात्रता। किसी व्यक्ति के सामने ही नहीं; किसी भगवान के सामने ही नहीं; किसी गुरु के सामने ही नहीं; झुकने की पात्रता! किसी से संबंध नहीं है इस बात का कि आप किसी के लिए झुकें। नहीं, आप झुके हुए हों। यह सवाल नहीं है कि आप किसी के लिए झुकें। झुका हुआ मन हो, प्रतिपल झुकने को तैयार हो। उस झुकने से ही सीखना उपलब्ध होता है। जो नहीं सीखना चाहते, वे अकड़ कर खड़े रह जाते हैं।

अंधविश्वास से भरी हुई विनम्रता व्यर्थ है। लेकिन अहंकार हर स्थिति में व्यर्थ है। और अगर यही चुनना हो—अहंकार में चुनना हो और अंधविश्वास से भरे हुए झुकने में चुनना हो—तो मैं कहता हूं कि दूसरे अंधविश्वास से भरे हुए झुकने को चुन लेना। क्योंकि जो आज अंधविश्वास से झुक रहा है, झुकने के ही कारण इतना सीख लेगा कि उस सीखने की वजह से अंधविश्वास मिट सकता है। लेकिन जो अकड़ कर ही खड़ा है, वह कभी कुछ नहीं सीख पाएगा। और बिना कुछ सीखे अहंकार नहीं मिट सकता है।

इसीलिए पीड़ा होती है कि मैं अकड़ कर खड़ा हूं और कोई दूसरा झुक रहा है। और भी कारणों से पीड़ा होती है। यह भी पीड़ा हो सकती है नंबर दो कि मेरे भीतर भी झुकने का तीव्र भाव आ गया है, लेकिन सदा की अकड़ने की आदत अकड़ कर खड़ी है और प्राण झुक जाना चाहते हैं। तो एक भीतर द्वंद्व खड़ा हो गया है। इस द्वंद्व को सुलझाने का एक ही उपाय दिखाई पड़ रहा है कि जो झुक रहे हैं वे गलत कर रहे हैं। ताकि मैं भी अपने भीतर जो झुकने की प्रवृत्ति है उसको कह दूं कि तू गलत है।

अगर भीतर झुकने का भाव पैदा हो गया है तो यह सौभाग्य है, यह धन्य भाग्य है। यह सवाल किसी व्यक्ति के आस-पास झुकने का नहीं है। और मेरे पास तो झुकने का बिलकुल ही नहीं है। लेकिन झुकने के भाव का बड़ा मूल्य है।

तीसरी बात, आज तक दुनिया में ऐसे लोग हुए हैं जो चाहते हैं कि हमारे चरणों में झुको। अगर गौर से हम देखें, तो वे लोग जो चाहते हैं कि मैं कभी कहीं न झुकूं, सिक्के के एक पहलू हैं; उसी सिक्के का दूसरा पहलू वह आदमी है जो कहता है कि सब मेरे चरणों में झुकें। गुरुओं की जो लंबी परंपरा है, वह इसी तरह के मोहग्रस्त लोगों की परंपरा है जो चाहते हैं कि लोग मेरे चरणों में झुकें। उनकी पांच हजार वर्ष की परंपरा ने अत्यधिक शोषण किया है मनुष्य का। उन झुकाने वाले लोगों ने, जिन्होंने चाहा कि झुको

न तो मैं इस पक्ष में हूं कि कोई किसी को समझाए कि मेरे पैरों में झुको, न ही मैं इस पक्ष में हूं कि कोई किसी को समझाए कि कभी झुकना मत; मैं इन दोनों बातों के पक्ष में नहीं हूं। मेरा पक्ष यह है कि झुकने का भी अपना आनंद है; झुकने का भी अपना अर्थ है; झुकने के भी अपने प्रतीक हैं

और प्रलोभन दिया झुकने के लिए—कि झुकोगे, पैर छुओगे, चरणों में सिर रखोगे, समर्पण कर दोगे चरणों में मेरे, तो मोक्ष, स्वर्ग, पुण्य, सब उपलब्ध हो जाएगा। मेरी कृपा से सब मिल जाएगा। मेरे आशीर्वाद से सब मिल जाएगा। गुरु-चरणों की कृपा से सब मिल जाएगा। गुरुजन यह समझाते रहे हैं। वे तो यहां तक कहते रहे हैं कि अगर गुरु और गोविंद दोनों खड़े हों, तो पहले गुरु के चरणों में झुक जाना, क्योंकि गुरु ही गोविंद को बताने वाला है। गुरुजन यही समझाते रहे हैं। वे कहते हैं कि बिना गुरु के तो ज्ञान होगा ही नहीं। इसलिए गुरु के चरण पकड़े बिना कोई उपाय नहीं है।

अब यह बड़े मजे की बात है कि अगर गुरु लोग ही यह समझा रहे हों, तो स्पष्ट है कि प्रयोजन क्या है। तो मैं भी कहता हूं कि जो आदमी झुकाना चाहता हो अपने चरणों में, भूल कर भी उसके चरणों में मत झुकना। जो आदमी कहता हो कि झुको मेरे चरणों में, वह आदमी तो अत्यंत पाप की बात कर रहा है। मत झुकना उसके चरणों में! इस बात के कहने के कारण ही वे चरण अपवित्र हो गए। न तो किसी की आकांक्षा से झुकना, न अपनी आकांक्षा से झुकना कि मुझे कुछ मिल जाएगा।

लेकिन अगर कभी वह क्षण आ जाए जीवन में कि पता भी न चले कि हम कब झुक गए हैं, तो उस क्षण को भी चूक मत जाना। क्योंकि उस क्षण में जो उपलब्ध होगा, उस क्षण से गुजर जाने में जो अनुभव होगा, उस क्षण के पहले जो प्रतीति होगी और उस क्षण में जो प्रतीति होगी, उसे बताने का कोई उपाय नहीं कि वह प्रतीति क्या है।

मेरी बात थोड़ी कठिन हो गई। क्योंकि न तो मैं इस पक्ष में हूं कि कोई किसी को समझाए कि मेरे पैरों में झुको, न ही मैं इस पक्ष में हूं कि कोई किसी को समझाए कि कभी झुकना मत; मैं इन दोनों बातों के पक्ष में नहीं हूं। मेरा पक्ष यह है कि झुकने का भी अपना आनंद है; झुकने का भी अपना अर्थ है; झुकने के भी अपने प्रतीक हैं। लेकिन वे ही उन्हें जानते हैं जो अनायास, अकारण, बिना किसी फल की इच्छा के, अचानक पाते हैं कि झुकना हो गया है। उस झुकने का एक आध्यात्मिक मूल्य है। वह एक गेस्चर है, वह एक बहुत स्प्रिचुअल गेस्चर है। वह एक बहुत अदभुत अभिव्यक्ति है। दुनिया से उसको मैं नहीं मिटाना चाहता हूं।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उस अभिव्यक्ति के आधार पर कुछ लोग दूसरों को अपने पैरों में झुकाने की शिक्षा दें और शोषण करें। उसके भी मैं पक्ष में नहीं हूं। इसलिए जो आदमी कहता हो कि आओ और पैर छुओ और प्रलोभन देता हो, उस आदमी को क्रिमिनल समझना, उसको अपराधी समझना, और उसको दंडित किए जाने की, अच्छा कोई समाज होगा तो व्यवस्था करेगा वह समाज। लेकिन जो आदमी अकड़ कर खड़ा है और कहता है कि मैं कभी नहीं झुकूंगा और कहीं झुकना भी मत, वह आदमी भी अपराधी है, क्योंकि वह भी एक गलत बात सिखा रहा है।

तूफान आते हैं हवाओं के, आंधियां आती हैं, बड़े दरख्त अकड़ कर खड़े रह जाते हैं, छोटे पौधे झुक जाते हैं और जमीन पर सो जाते हैं। बड़े दरख्त अकड़े ही रहते हैं, खड़े ही रहते हैं, रेसिस्ट करते हैं, प्रतिरोध करते हैं हवाओं का, और टूट जाते हैं। छोटे पौधे झुक जाते हैं, हवाएं गुजर जाती हैं, पौधे फिर वापस खड़े होकर नाचने लगते हैं, वे जीवित रह जाते हैं। उन छोटे पौधों को झुकने की कोई अदभुत कीमिया पता है जो बड़े पौधों को नहीं है। बड़े पौधे अहंकार की भांति सख्त और कठोर हैं। वे टूटते हैं, लेकिन झुकते नहीं।

और स्मरण रहे, जिसने झुकने की कला छोड़ दी, वह बूढ़ा हो गया और टूटने के करीब पहुंच गया। बच्चे और बूढ़े में यही फर्क है। बच्चा लोचपूर्ण है, फ्लेक्सिबल है, झुकता है, लोच से भरा है, कैसे भी झुक सकता है। बूढ़ा अकड़ गया; झुक नहीं सकता, झुका कि टूट जाएगा। हड्डियां सब मजबूत हो गई हैं, अब कहीं झुकाव मुश्किल है। इसलिए बूढ़ा मरता है और बच्चा जीता है। बच्चा अभी जवान होगा, बूढ़े की सिर्फ मौत आएगी! जिस आदमी की मानसिक तल पर सारी

> न संगीत में इतना रस है, न अध्यात्म में इतना रस है; निंदा में जो रस है वह अदभुत है। वह रस ही अदभुत है। न वीणा इतना संगीत पैदा कर सकती है, न संत ऐसी वाणी दे सकते हैं, जैसा निंदा में आनंद उपलब्ध होता है। वह क्यों होता है?

हड्डियां सख्त हो गईं, मन के तल पर सारे स्नायु कठोर और पत्थर के हो गए और झुकने की क्षमता भीतर खो दी, उस आदमी की आत्मा मरने के करीब पहुंच गई, मर चुकी! लेकिन जो वहां भीतर के तल पर भी लोचपूर्ण है और हवाओं में झुकता है, तूफानों में झुकता है, वह व्यक्ति और बड़े जीवन के निकट पहुंचने की पात्रता पैदा कर रहा है।

कभी देखना आंधियों में जब छोटे पौधे झुक जाते हैं—कितने ग्रेसफुली, कितने प्रसादपूर्ण। उनके झुकने में न कोई दयनीयता है, न उनके झुकने में कोई पीड़ा है, न कोई दुख है, उनके झुकने में भी एक सौंदर्य है। और खड़े हुए वृक्षों को भी देख लेना—अकड़े हुए। और उनकी इस अकड़ में न कोई ग्रेस, न कोई प्रसाद है। उनकी अकड़ में सिर्फ एक वहम है कि मैं इतना बड़ा और कैसे झुक सकता हूं?

यही, यह भ्रम तोड़ देगा उन्हें, जड़ों से उखाड़ देगा। और ये छोटे-छोटे पौधे, जिनकी जड़ें भी छोटी-छोटी थीं, तूफान और आंधियां जिन्हें उड़ा कर कहीं भी ले जा सकती थीं, वे जीवित बाहर

वापस निकल आएंगे—पहले से भी ज्यादा शक्तिपूर्ण, पहले से भी ज्यादा आनंद से भरे हुए। क्योंकि एक तूफान से गुजर जाना एक अनुभव है और जीवित बच जाना एक उपलब्धि।

जीवन में एक कला, एक कला की जरूरत है कि हम ऐसे तरल, ऐसे सरल, ऐसे विनम्र कि झुकने में कहीं कोई पीड़ा न मालूम हो। जिसे झुकने में पीड़ा मालूम होती है, वह जीवन की लोचपूर्ण कला को नहीं जानता है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि जो... झुकने का मतलब यह नहीं है, विनम्र होने का, सरल होने का, तरल होने का यह मतलब नहीं है कि आप आंखें बंद कर लें, अंधे हो जाएं, इसका यह मतलब नहीं है कि जो कोई भी आपको कहे कि चलो झुको, और जोर से आवाज दे, वहीं आप झुक जाएं।

मैं आपको कहता हूं—यह बात बहुत पैराडॉक्सिकल दिखाई पड़ेगी, यह बहुत विरोधी दिखाई पड़ेगी—लेकिन मैं आपको कहता हूं, केवल वे ही लोग जो झुकने की पात्रता रखते हैं, अगर किसी दिन न झुकने का निर्णय ले लेते हैं, तो दुनिया का कोई भी तूफान उन्हें न झुका सकता है और न तोड़ सकता है। केवल वे ही लोग जो झुकने के लिए हमेशा तैयार होते हैं, अगर किसी दिन न झुकने का तय कर लें, इस दुनिया की कोई ताकत फिर उनको झुका नहीं सकती है। क्योंकि न झुकने की ताकत, वे झुकने के माध्यम से इतनी इकट्ठी कर लेते हैं, जिसका कोई हिसाब नहीं।

लेकिन जो लोग हमेशा अकड़ कर खड़े रहते हैं कि नहीं झुकेंगे, नहीं झुकने की चेष्टा में उनकी कितनी शक्ति अपव्यय हो जाती है, उन्हें पता नहीं। वे धीरे-धीरे इंपोटेंट हो जाते हैं, धीरे-धीरे उनकी सारी शक्ति क्षीण हो जाती है अपने से ही लड़ने में कि नहीं झुकूंगा। अपने को ही सम्हालने में, अपने को ही रोकने में, रेसिस्ट करने में उनकी सारी शक्ति खत्म हो जाती है, भीतर से वे खोखले हो जाते हैं। जैसे वृक्ष भीतर से खोखले हो जाते हैं। और तब कोई छोटा सा हवा का झोंका भी उन्हें झुका सकता है।

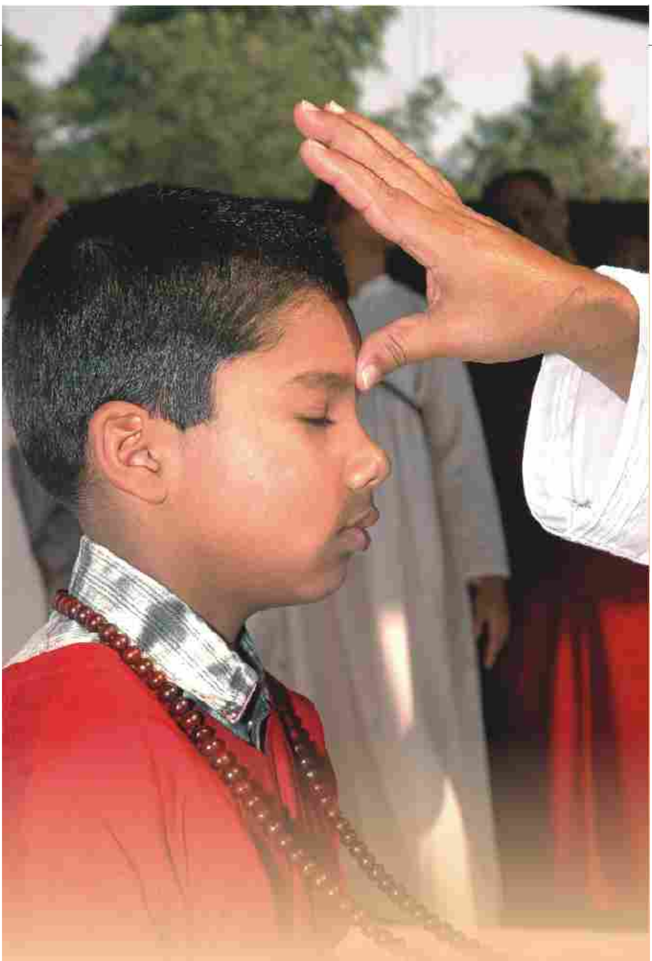

जिसने झुकने की कला छोड़ दी, वह बूढ़ा हो गया और टूटने के करीब पहुंच गया। बच्चे और बूढ़े में यही फर्क है। बच्चा लोचपूर्ण है, फ्लेक्सिबल है, झुकता है, लोच से भरा है, कैसे भी झुक सकता है। बूढ़ा अकड़ गया; झुक नहीं सकता, झुका कि टूट जाएगा

अब यह बड़ी उलटी बात दिखाई पड़ेगी।

जीसस जैसे लोग जो झुकने के लिए सदा तैयार हैं, जिस दिन असत्य के सामने झुकने से इनकार कर देते हैं, उस दिन फिर मौत भी नहीं झुका सकती, फिर कोई शक्ति नहीं झुका सकती। सुकरात जैसे लोग जिनकी विनम्रता का कोई हिसाब नहीं, जो एक छोटे से बच्चे से भी सीखने को तैयार हैं, जिन्होंने जीवन में कभी अकड़ने का खयाल ही नहीं लिया, जब सत्य की लड़ाई खड़ी होती है, तो वे जहर पीने को तैयार हो जाते हैं।

लेकिन उनके इस खड़े होने में भी कुरूपता नहीं है। क्योंकि वह खड़ा रहना अहंकार के लिए खड़ा रहना नहीं है। वह खड़ा रहना सत्य के लिए खड़ा रहना है। अहंकार तो बड़े से बड़ा असत्य है। जो अहंकार के लिए खड़ा है वह असत्य के लिए खड़ा है। जो सत्य के लिए खड़ा होता है वह अहंकार के लिए कभी खड़ा नहीं होता। क्योंकि सत्य केवल उसी को उपलब्ध होता है जिसका अहंकार विलीन हो चुका है।

फिर भी इन मित्र ने निवेदन किया है, तो उनकी तरफ से आपको सूचना कर दूं, मेरे पैर भूल कर भी मत छूना। मुझे जरा भी रस नहीं है। आप कवायद करें, मुझे क्या मिल सकता है? आप झुकें, उठें, साथ-साथ मुझे भी थोड़ा-बहुत झुकना-उठना पड़ता है, मैं भी थकता हूं, और कुछ होता नहीं। मुझे क्या मिलेगा आपके पैर में झुक जाने से? क्या मिल सकता है? आपके झुकने से मुझे क्या मिल सकता है? इसलिए उन्होंने निवेदन किया, ठीक ही किया। नहीं, आप भूल कर भी मेरे पैर में मत झुकना।

लेकिन यह नहीं कह रहा हूं कि आप जीवन में झुकना भूल जाना; उसकी तैयारी रखना। क्योंकि जो झुक जाते हैं, जीवन की सरिता उनकी गगरियों में आ जाती है; और जो अकड़े रह जाते हैं, जीवन की सरिता से वंचित रह जाते हैं।

— *ओशो*

जीवन रहस्य, प्रवचन—11

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)